70 Years of Diplomatic Relations between India and Germany

Bilateral relations between India and Germany are founded on shared democratic principles and are marked by a high degree of trust and mutual respect. With common interest in maintaining a rule-based international order, the two democracies are close strategic partners, maintaining continuous exchange of ideas through more than thirty consultations and dialogue forums.

The year 2021 signifies an important milestone for the India-Germany relationship as it marks the 70th anniversary of the establishment of diplomatic relations between the two countries. India was among the first countries to recognize the Federal Republic of Germany, as soon as the First Instrument of Revision of the Occupation Statute for Germany was issued on March 6, 1951, allowing Germany to conduct foreign relations, an announcement was made the next day, March 7, 1951, about the establishment of diplomatic relations between India and the Federal Republic of Germany.

From the beginning, science and technology has been a key source of common interest for the countries. Germany played a crucial role in the establishment of the Indian Institute of Technology, Madras in 1959- a trailblazer in cutting-edge science and engineering education. The visit of Dr. Heinrich Lubke, President of the Federal Republic of Germany, to India in 1962 marked the beginning of the Indo-German Technical Assistance Program. This collaboration in the field of science, research and technology marked the beginning of a long and fruitful journey which has yielded significant results and contributed immensely to the scientific and economic successes of the two nations.

India and Germany have a long tradition of academic and cultural exchange. Max Mueller was the first scholar of Indo-European languages to translate and publish the Upanishads and the Rigveda. German interest in Indian philosophy and languages had resulted in the setting up of the first Chair of Indology at the University of Bonn in 1818. As a result of this strong tradition of academic and cultural exchange, there has been growing interest in Germany in ancient as well as modern Indian art forms, such as dance, music and literature, motion picture and TV industry.

As India liberalised its economy in the last decade of the 20th century, the India-Germany economic partnership emerged as one of the biggest beneficiaries. Trade and investment relations rapidly picked up and by the turn of the millennium, it was clear that the new intensity in bilateral relations had to be recognised and nurtured. On 18 May 2000, India and Germany signed the 'Agenda for the Indo-German alliance in the 21st century' which laid the foundation for a higher order of bilateral cooperation in a rapidly changing global era.

Relations between the two countries received a fresh impulse when India and Germany entered into a 'Strategic Partnership' in 2001. The increased momentum in bilateral relations during the first decade of the 21st century culminated in the institutionalisation of the Intergovernmental Consultations (IGC), held since 2011 every two years at the level of Heads of Government. The IGC is a whole-of-government dialogue format which allows for a comprehensive review of bilateral relations and identification of fresh areas of engagement.

Stepping into its 20th year in 2021, the India-Germany Strategic Partnerships strengthened by expanding economic relations and growing people-to-people contacts. Building on the robust foundation, strong mechanisms of cooperation have been established across a diverse range of sectors- in economic, science and technology, defence, strategic and cultural spheres. In recent years, the relationship has gained immensely from the personal attention and close engagement between our leaders at the highest levels. The multi-faceted cooperation between the two countries stretches across multilateral issues, including climate change and reform of the UN Security Council. Both the countries remain committed to working together to defeat terrorism, ensure freedom of navigation and rule of law, achieve sustainable development and have a fair system of global trade.

The bilateral relationship has reached a level of maturity with the completion of 70 years of establishment of diplomatic relations. Marking the 70th anniversary on March 7, 2021, the Foreign Ministers of India and Germany delivered special messages conveying felicitations and good wishes to the people of both countries and calling for further intensification of partnership based on the robust foundation of the last 70 years.

As the world grapples with the disruption brought about by the COVID-19 pandemic, the India-Germany strategic partnership is poised to play a crucial role in creating and supporting global capacities to face complex challenges. Cooperation between the two countries would go a long way in ensuring that the post-pandemic global order is peaceful, development-oriented, human centric and sustainable.

India Post is privileged to issue a Commemorative Postage Stamp on 70 Years of Diplomatic Relations between India and Germany, to celebrate the natural partnership between the two vibrant democracies working together for global peace and development.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation cachet	:	Ms. Gulistaan
Text	:	Ms. Anika Singh

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts



भारत और जर्मनी के बीच राजनयिक संबंधों के 70 वर्ष

70 YEARS OF DIPLOMATIC RELATIONS BETWEEN INDIA AND GERMANY

विवरणिका BROCHURE

भारत और जर्मनी के बीच राजनयिक संबंधों के 70 वर्ष

भारत तथा जर्मनी के बीच द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर हुई है। दोनों देशों का एक–दूसरे पर परस्पर विश्वास तथा सम्मान, इन संबंधों की प्रमुख विशेषता है। नियमों पर आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनाए रखने का साझा उद्देश्य रखते हुए ये दोनों लोकतंत्र, तीस (30) से अधिक विचार–विमर्श तथा संवाद मंचों के माध्यम से विचारों का आदान–प्रदान करते हुए एक–दूसरे के कूटनीतिक भागीदार भी हैं।

वर्ष 2021, भारत तथा जर्मनी के बीच राजनयिक संबंधों के अब तक के सफर में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि यह दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ है। भारत उन पहले देशों में था, जिसने जर्मन संघीय गणराज्य को मान्यता प्रदान की थी। 6 मार्च, 1951 को जर्मनी के कब्जे संबंधी विधान के संशोधन का प्रथम दस्तावेज (फर्स्ट इंस्ट्रूमेंट ऑफ रिवीजन ऑफ द ऑक्यूपेशन स्टैटयूट) जारी होने के बाद, जब जर्मनी को राजनयिक संबंध स्थापित करने की अनुमति प्रदान की गई, तो इसके अगले ही दिन अर्थात् 7 मार्च, 1951 को भारत तथा जर्मन संघीय गणराज्य के बीच राजनयिक संबंधों की विधिवत घोषणा की गई।

शुरुआत से ही विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, दोनों ही देशों के बीच परस्पर रुचि का मुख्य विषय रहा है। जर्मनी ने 1959 में मद्रास में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संस्थान ने अत्याधुनिक विज्ञान तथा इंजीनियरी शिक्षण के क्षेत्र में अद्भुत मिसाल पेश की। 1962 में जर्मन संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ. हेनरिक लूबर्क की भारत यात्रा ने भारत–जर्मन तकनीकी सहायता कार्यक्रम की नींव रखी। विज्ञान, अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग की इस लंबी यात्रा के अत्यंत सार्थक परिणाम रहे हैं, जिसने विज्ञान तथा आर्थिक क्षेत्र में दोनों ही देशों को महत्वपूर्ण सफलताएं दिलाई हैं।

भारत तथा जर्मनी के बीच अकादमिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में विचार–विमर्श की लंबी परंपरा रही है। मैक्स म्यूलर, भारतीय–यूरोपियन भाषाओं के पहले विद्वान थे, जिन्होंने उपनिषदों तथा ऋग्वेद का अनुवाद प्रकाशित किया। भारतीय दर्शनशास्त्र तथा भाषाओं में जर्मनी की गहरी रुचि के परिणामस्वरूप 1818 में बॉन विश्वविद्यालय में भारत–अध्ययन (इंडोलजी) के प्रथम चेयर (शीर्ष अकादमिक पद) की स्थापना की गई। अकादमिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों के विचारों के आदान–प्रदान की इसी मजबूत परंपरा के फलस्वरूप, जर्मनी में प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय कला के विभिन्न आयामों जैसे नृत्य, संगीत, साहित्य, चलचित्र तथा टीवी उद्योग के बारे में लोगों की रुचि में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में जब भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया, तो भारत तथा जर्मनी की आर्थिक भागीदारी इसके सबसे बड़े लाभार्थियों के रूप में उभरी। व्यापार तथा निवेश संबंधों में नई गति आई और नई सहस्राब्दी की शुरुआत होने तक यह स्पष्ट हो चुका था कि इन द्विपक्षीय संबंधों की नई प्रगाढ़ता को नए सिरे से मान्यता प्रदान की जाए और प्रोत्साहित किया जाए। 18 मई, 2000 को भारत तथा जर्मनी ने '21वीं शताब्दी में भारत–जर्मनी सहयोग के एजेंडा' पर हस्ताक्षर किए, जिसने तेजी से बदलते वैश्विक युग में अधिक सुदृढ़ द्विपक्षीय सहयोग की मजबूत बुनियाद रखी।

2001 में 'कूटनीतिक भागीदारी' की दिशा में कदम बढ़ाने के बाद भारत और जर्मनी के संबंधों को नई मजबूती मिली। 21वीं शताब्दी के प्रथम दशक में द्विपक्षीय संबंधों की प्रगाढ़ता ने दोनों देशों की सरकारों के बीच परामर्शी (आईजीसी) तंत्र को संस्थानिक रूप प्रदान किया है। इस तंत्र के अंतर्गत वर्ष 2011 से दोनों देशों के शासनाध्यक्षों की बैठक प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित हो रही है। यह आईजीसी, समग्र सरकारी विचार–विमर्श मंच है, जिसके तहत द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक समीक्षा तथा सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान की जाती है।

निरंतर विस्तृत होते आर्थिक संबंधों तथा दोनों देशों के बीच लोगों के बढ़ते आपसी संबंधों से नई मजबूती पाते हुए वर्ष 2021 में भारत तथा जर्मनी की कूटनीतिक भागीदारी अपने 20वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। दोनों देशों ने आपसी संबंधों की मजबूत नींव को आधार बनाते हुए विविध क्षेत्रों में सहयोग के सुदृढ़ तंत्रों की स्थापना की है, जिसमें आर्थिक, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, रक्षा, कूटनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र शामिल हैं। विगत वर्षों के दौरान, शीर्षस्थ नेतृत्व की निजी रुचि तथा करीबी सहयोग के फलस्वरूप भारत–जर्मनी के संबंधों को नए आयाम प्राप्त हुए हैं। दोनों देशों के बीच बहुआयामी सहयोग के दायरे में जलवायु परिवर्तन से ले कर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार जैसे विविध बहुपक्षीय विषय शामिल हैं। दोनों ही देश आतंकवाद को मात देने, निर्बाध सामुद्रिक आवाजाही तथा कानून व्यवस्था का सम्मान करने, सतत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने तथा वैश्विक व्यापार की निष्पक्ष तथा ईमानदार प्रणाली के उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में साझा प्रयास करने के प्रति प्रतिबद्ध है।

राजनयिक संबंधों की स्थापना के सफल 70 वर्षों की इस अवधि के दौरान दोनों ही देशों के राजनयिक संबंध भली–भांति परिपक्व हो चुके हैं। आपसी संबंधों की 70वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 7 मार्च, 2021 को भारत तथा जर्मनी के विदेश मंत्रियों ने दोनों देशों के लोगों को शुभकामनाएं दीं और अपनी भागीदारी को, विगत 70 वर्षों की सफल यात्रा के आधार पर और प्रगाढ़ तथा सुदृढ़ बनाने का संकल्प लिया।

कोविड–19 वैश्विक महामारी के इस दौर ने समस्त विश्व के लिए नई बाधाएं उत्पन्न की हैं, ऐसे समय में भारत तथा जर्मनी की कूटनीतिक भागीदारी इन जटिल चुनौतियों का सामना करने की दिशा में वैश्विक क्षमता का निर्माण तथा समर्थन करने के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की स्थिति में है। दोनों देशों का आपसी सहयोग यह सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा कि वैश्विक महामारी के बाद उभरने वाली वैश्विक व्यवस्था शांतिपूर्ण, विकासोन्मुखी, लोकहितकारी तथा सतत् स्वरूप की हो।

भारतीय डाक, वैश्विक शांति तथा विकास की दिशा में साझा रूप से प्रयासरत दो सशक्त लोकतंत्रों के बीच स्वाभाविक भागीदारी को रेखांकित करते हुए 'भारत और जर्मनी के बीच राजनयिक संबंधों के 70 वर्ष' विषय पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : सुश्री गुलिस्तॉं

पाठ : सुश्री अनिका सिंह

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	2500 पैसे
Denomination	:	2500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	352400
Stamps Printed	:	352400
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D,html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00